बड़ा कैसे बनें...?

ब्र.कु.अनुज,दिल्ली

आपने दुनिया में प्रचलित एक डिश खायी होगी, जिसको हम कहते हैं दही वड़ा। लेकिन इसके बनाने की प्रक्रिया को हमने जानने की कोशिश की कि ये बनता कैसे है? खाने में ये जितना चटपटा और स्वादिष्ट होता है, उतना ही उसे बनाने में समय लगता है। आज सभी किसी न किसी अभिमान के साथ अपने को जोड़कर कहते हैं कि मैं बड़ा तू छोटा, मैं सही, मैंने जो कहा वो सही। बड़ेपन का भाव लाने में कोई अपने आपको पीछे नहीं रखता। लेकिन बड़ा बनना इतना आसान नहीं है।

जब कभी दही वड़ा बनाना होता है तो उड़द/मूंग की दाल को वड़ा बनाने से एक दिन पहले रात को भिगो के रख देते हैं। दूसरे दिन उसे मिक्सी में अच्छी तरह से पीसते हैं। फिर उसके पकौड़े बनाकर उसे पानी में दोबारा डालते हैं ताकि वो नरम रहे। फिर अंत में उसे दही में डालकर उसके ऊपर सजावट करके खाने के लिए परोसते हैं। अब आप देखिए कि वड़ा बना कैसे? सबसे पहले उसे रात भर भीगना पड़ा। उसके बाद उसे अच्छी तरह से पिसना पड़ा, पिसने के बाद उसे खौलते तेल के कराही में अपने आपको तलवाना पड़ा। फिर दोबारा उसे पानी में भीगना पड़ा। फिर जाकर दही में दोबारा उसे डुबकी लगानी पड़ी, तब जाकर उसमें स्वाद आया और लोगों ने उसे पसंद किया। अब आप बताओ, वड़ा नहीं बड़ा कैसे बनेंगे?

सभी को बस बड़ा बनने का शौक है, लेकिन वड़े की तरह अपने आप को तपाने की, जलाने की, सहन करने की ताकत नहीं है। बड़ा सभी किसी पद, पोज़ीशन, स्टेटस को प्राप्त कर लेने वाले को मानते हैं, और आप भी यही मानते होंगे। लेकिन हमारे इतिहास में, हमारे समाज में बड़ा उसे माना जाता है जो सभी के साथ रहकर, सभी की भावनाओं की कद्र करते हुए, सभी की एक-एक ज़रूरतों को पूरा करते हुए, सभी का सम्मान करते हुए, सभी का सहन करते हुए अपने आप को सबके बीच रखे। तो सच में वो बड़ा कहलाने लायक होता है। एक उदाहरण से आप इसे समझ सकते हैं कि आज सभी को खुद को सम्भालने का स्वमान नहीं है, और ना ही खुद के लिए सम्मान है। सभी घर में बड़े हैं, लेकिन सबका व्यवहार छोटे से भी बदतर है।

आज मालिक नौकर के साथ नौकर बन जाता, ड्राइवर के साथ ड्राइवर बन जाता, वो उसके साथ वैसे ही बात करता जैसे नौकर बात करता है। नौकर खुद बोलता कि साहब को इतनी समझ नहीं है कि अपने से छोटों से कैसे बात करनी है। बात बात में कह भी देते हैं कि हम भले ही आपके यहाँ नौकरी करते हैं पर हमारी भी कोई इज़्ज़त है। अब यहाँ इज़्ज़त से हमें यह अर्थ ज़रूर निकालना चाहिए कि सभी को सम्मान की ज़रूरत है। पैसे से हम किसी का दिल नहीं खरीद सकते, उसके दिल पर राज नहीं कर सकते। समाज में ये जो चेन बनी है कि कोई बहुत पढ़-लिख गया, किसी ने थोड़ी कम पढ़ाई की, कोई अनपढ़ है, कोई गंवार है, तभी तो यह समाज चल रहा है। अगर वो भी पढ़ लेता, तो जो आपके घर के काम हैं, वो कैसे करता, वो तो अच्छी नौकरी कर लेता। लेकिन आज सभी का मन अलग-अलग है। किसी का मन करता है पढ़ने का और किसी का नहीं करता और कोई मजबूरी में नहीं पढ़ पाता, लेकिन इसका ये अर्थ नहीं है कि वो मजबूर है, बल्कि उस आत्मा के अंदर वही नेचर मौजूद है जो आपके अंदर है। लेकिन हम अपने पद, पोज़ीशन, पैसे के अहंकार में दूसरों को सम्मान देना भूल जाते हैं। आप किसी को याद दिलाओ कि मैं बड़ा हूँ, ये तो शोभता ही नहीं। अरे! आप बड़े ही हैं, लेकिन आपको ये बताना पड़ रहा है, इससे बड़े शर्म की बात और क्या हो सकती है!

हमारे ब्रह्माकुमारीज़ के संस्थापक प्रजापिता ब्रह्मा बाबा ने छोटी छोटी कन्याओं को इतना सम्मान दिया, इतना ऊँचा उठाया, उनको कहते थे कि आप छोटे नहीं हैं, आप ठाकुर हैं, आप पूजनीय हैं, इतना सम्मान दिया। उसमें हर तरह के लोग शामिल थे, पढ़े-लिखे भी थे, कुछ ऐसे भी थे जिन्होंने कुछ भी पढ़ा नहीं था, लेकिन बाबा ने कभी ना पढ़ाई देखी, ना उम्र देखा, सबको सम्मान दिया और सिरहाने बिठाया। उनकी पालना में पलने वाली दादियाँ भी वैसे ही सभी को स्नेह प्यार देकर आगे बढ़ाती रहीं और बढ़ा रही हैं। आज इस यज्ञ में बहुत अलग-अलग तरह के संस्कार की आत्मायें हैं, लेकिन सबको एक साथ लेकर चलना, ये है बड़े पन की निशानी। सबको सहना भी और सबको समाना भी है, तब जाकर आप बनेंगे बड़े बड़े बड़े।

उपलब्ध पुस्तकें

मन की बातें

-ब्र.कु. सूर्य

प्रश्न - मेरा अमृतवेला बहुत मिस होता है। देर से उठने से बहुत गिल्टी फील होती है। मैं चाहती हूँ मैं भी इस समय ईश्वरीय याद का सुख लूँ। कोई सहज उपाय बतायें।

उत्तर - बहन, यह सत्य है कि चारो युगों में सबसे ज़्यादा परम सुख अमृतवेले ही मिलता है। इसी समय हमारे अति प्राण प्यारे शिव बाबा हम पर अपनी किरणें डालते हैं, प्रकृति भी शांत होती है व चित्त भी शांत होता है। मन में दृढ़ संकल्प करो कि सवेरे चार बजे उठना ही है। ब्रेन में अलार्म भरकर सो जाओ। विधि है ...बाबा को याद करके पाँच बार यह संकल्प करो कि मुझे चार बजे उठना है..बस ब्रेन में अलार्म बजेगा और आप फ्रेश उठेंगी। एक बात सभी को जाननी ज़रूरी है कि पेट को ठीक रखना अति आवश्यक है। पेट में कब्ज, गैस व एसिडिटी न हो। नहीं तो सवेरे उठा नहीं जाएगा और यदि उठ भी गये तो आनंद नहीं आयेगा। इसके लिए अपना खानपान भी ठीक करें व किसी अच्छे आयुर्वेदिक डॉक्टर से लम्बा उपचार भी करायें।

प्रश्न - पवित्रता की स्थिति अति महत्वपूर्ण है, परन्तु हमारे लिए यह कठिन भी है, क्योंकि हमारा पुराना जीवन अच्छा नहीं रहा। हम बुरे संग में रहे, हम अपनी पवित्रता को बहुत बढ़ाना चाहते हैं, कुछ पावरफुल संकल्प व विधि हमें बताइये।

उत्तर - नि:सन्देह, पवित्रता विश्व की सर्वश्रेष्ठ शक्ति है। परन्तु कलियुग के गन्दे माहौल में अनेक युवक बुरे संग में अपवित्रता का मार्ग अपना लेते हैं और आजकल की मेडिकल साइंस इसमें उन्हें साथ देती है। पवित्रता की शक्ति योगबल से ही बढ़ती है। अशरीरीपन का अभ्यास, स्वमान, ज्ञान-मुरली - ये ही सब साधन पवित्रता को बढ़ाने वाले हैं। हम कुछ प्रतिज्ञा के संकल्प लिख रहे हैं, वो आपको मदद करेंगे। प्रतिदिन अमृतवेले अवश्य उठो और एकान्त में इस तरह स्वयं से बातें करो - मैंने भगवान को पवित्र रहने का वचन दे दिया है। वचन देकर मैं तोड़ूंगा नहीं। पवित्रता ही तो मेरा स्वधर्म है, इसी से तो सच्ची सुख शान्ति है, मुझे इस स्वधर्म को अपनाना है। पवित्रता अपनाना तो भगवान की आज्ञा है, मुझे इसकी पालना करनी है। मैंने एक बार जिस पथ पर कदम रख दिया अब मैं पीछे नहीं हटूंगा। मुझे तो पवित्र बनकर इस परमात्म-कार्य में सहयोग देना है। इस तरह के पॉज़ीटिव संकल्प करने से हमें परमात्म शक्ति प्राप्त होगी व ये मार्ग सरल हो जाएगा।

प्रश्न - मैं आपसे एक पर्सनल प्रश्न पूछना चाहता हूँ कि क्या आपको कभी तनाव नहीं होता? तनाव मुक्ति का कोई सरल उपाय बतायें।

उत्तर - यह युग तनाव का युग बन गया है। विकास कार्यों के साथ तनाव का भी खूब विकास हुआ है। सत्यता यह है कि मनुष्य का मन अति निर्बल हो गया है, इसलिए उसे जल्दी ही छोटी बात में भी तनाव हो जाता है। हम देवता तो नहीं हैं जिन्हें तनाव न हो। तनाव हमें भी होता है, परन्तु हमारे पास ईश्वरीय ज्ञान का भण्डार है, इसलिए हम जल्दी ही तनाव मुक्त भी हो जाते हैं। राजयोग का अभ्यास हमें मदद करता है।

प्रश्न:- बाबा हमेशा कहते हैं कि बाप के दिलतख्तनशीन रहो। कौन बैठ सकते हैं बाबा के दिल पर और हम कैसे समझें कि हम दिलतख्तनशीन है या नहीं?

उत्तर:- भगवान के दिल पर राज्य करना - सोचकर ही कितना आनन्द आता है। इसका अर्थ है हमें वे बहुत प्यार करते हों, वे हमें चाहते हों, वे हमारा हमेशा ध्यान रखते हों। यह फीलिंग अंदर ही अंदर आयेगी। कई ये सोचकर परेशान रहते हैं कि शायद बाबा के दिल पर तो वही हैं जो साकार में उनसे स्टेज पर मिलते हैं। वे कभी-कभी यह भी देखते हैं कि स्टेज पर तो बाबा उन्हें बहुत प्यार कर रहा है जिनकी स्थिति निम्न स्तर की है तो कईयों के बहुत संकल्प चलते हैं। परन्तु नहीं, वे तो प्यार के सागर हैं, सबको ही प्यार करते हैं। देखना ये है कि जिन्हें वे प्यार करते हैं, उनके प्यार का रेसपांस वे क्या करते हैं? यदि वे ईश्वरीय आज्ञाओं पर पूर्णतया नहीं चलते तो प्यार के सागर का प्यार भी उनका कल्याण नहीं कर सकता।

घर बैठे ही आपको बाबा का प्यार अनुभव होगा, उनकी मदद अनुभव होगी, उनकी दृष्टि अनुभव होगी। अमृतवेले सुखद अनुभूति होगी, मुरली से उसका प्यार अनुभव होगा। ये है सच्चा प्रभु प्यार। भगवान के दिल पर चढ़ने वालों की तीन धारणाएं होंगी। प्रथम तो उन्होंने बाप को अपने दिल में बिठाया होगा, इसका अर्थ है कि वे योगयुक्त होंगे। दूसरा वे मास्टर सर्व शक्तिवान के नशे में रहेंगे और तीसरा उनकी स्थिति श्रेष्ठ होगी। श्रेष्ठ स्थिति अर्थात् वे सदा एकरस व प्रसन्न रहेंगे, उनके मूड नहीं बदलेंगे, वे क्रोध नहीं करेंगे, वे परेशान नहीं होंगे और वे हर परिस्थिति में शांत व अचल अडोल रहेंगे।

Contact e-mail - bksurya8@yahoo.com

देखिए 'अपना DTH' में फ्री 24 घंटे 'पीस ऑफ माइंड चैनल' ...उसके साथ 100 अन्य चैनल भी फ्री
अपने डी.टी.एच. डिश के डायरेक्शन का करें परिवनर्तन...
Satellite Position = 75° East, Satellite = ABS-2
LNB Frequency = 10600/10600, Frequency = 12226/12227
Polarization = H, Symbol = 44000
System = MPEG-2(DVB-S) / MPEG-4(DVB-S2)
FEC = 3/4, 22K = On/Auto, Mode = All/FTA
अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें... 8104777111/7014140133